RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-02
February -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

श्रीलंका–भारत संबंध : उभरते आर्थिक आयाम बदलते परिदृश्य में

समरवीर सिंह

शोधार्थी – दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Feb 2020

Keywords
औद्योगिक, साहूकारों, असंतुलन, पर्यटन, वित्त

ABSTRACT

भारत–श्रीलंका ने आर्थिक, व्यापारिक, औद्योगिक तथा सांस्कृतिक पर सम्पर्क स्थापित किये हैं। दोनों देश इस दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति कर आर्थिक सम्बन्धों को और अधिक मजबूत बनाने के लिए उत्साहित है। दोनों देशों के सम्बन्धों का एक प्रमुख पहलू आर्थिक पक्ष भी है। भारत श्रीलंका से व्यापार करने वाले प्रमुख बड़े देशों में से एक है लेकिन दोनों देशों के व्यापारिक सम्बन्ध सदैव एक जैसे नहीं रहे हैं। दोनों देशों के मध्य आर्थिक सम्बन्धों में रूकावट उत्पन्न करने वाले प्रमुख कारणों में श्रीलंका में भारतीय व्यापारियों तथा साहूकारों की धूमिल छवि, व्यापार घाटा, व्यापार असंतुलन एवं एक जैसे निर्यात हित प्रमुख है। भारत–श्रीलंका चाय, रबर तथा नारियल के अच्छे उत्पादक हैं अतः दोनों देश इनका निर्यात करते हैं। इस कारण इन उत्पादों के विश्व बाजार में दोनों एक–दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी हो गये हैं।[1] भारत तकनीकी रूप से समृद्ध एवं बेहतर रूप से विकसित होने के कारण श्रीलंका को बहुत सी वस्तुओं का निर्यात करता है। श्रीलंका की निर्यात शक्ति सीमित है। इस कारण परिणाम यह हुआ कि भारत तथा श्रीलंका के बीच व्यापारिक असंतुलन पैदा हो गया। दोनों देश इस असंतुलन से निजात पाना चाहते हैं लेकिन पूर्ण सफलता नहीं मिल रही है। दोनों देशों के व्यापारिक सम्बन्धों को और अधिक सुधारने की आवश्यकता है। भारत को बड़ा तथा विकसित देश होने के नाते श्रीलंका के साथ व्यापार बढ़ाने तथा असंतुलन को कम करने के भावी प्रयास करने आवश्यक है। पुनः क्रम के आधार पर लिए प्रभावी प्रयास संयुक्त उद्योग, तीसरे विश्व के देशों के साथ आपसी व्यापार तथा तीसरे विश्व के देशों को निर्यात का विस्तार औद्योगिक तथा कृषि के क्षेत्रों में विद्यमान सुविधाओं का और अधिक प्रयोग, पर्यटन को प्रोत्साहन आदि के माध्यम से हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं।[2]

शान्ति सेना की बापसी के बाद भारत–श्रीलंका ने संयुक्त उद्योग की स्थापना के लिए श्रीलंका के विदेश मंत्री श्री हेराल्ड हेरात के दौरे के दौरान जुलाई, 1991 में एक करार पर हस्ताक्षर किये। व्यापार, पूँजी–निवेश, वित्त और सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामाजिक विषयों से सम्बन्धित उप आयोगों की अक्टूबर, 1991 में कोलम्बो में बैठकें हुई जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को और अधिक मजबूत बनाने के उपायों पर विचार–विमर्श हुआ।[3]

अक्टूबर, 1992 में श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री रणसिंघे प्रेमदासा ने भारत की यात्रा की इस यात्रा में भारत तथा श्रीलंका के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने के प्रयास पर बल दिया गया। सार्क के अन्तर्गत सम्पन्न हुए 'साफ्टा' समझौते के आधार पर भारत–श्रीलंका व्यापार में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई। सन् 1994–95 में भारत–श्रीलंका का व्यापार बढ़कर 1,252 करोड़ रूपये का हो गया। मार्च, 1995 में श्रीलंका की राष्ट्रपति चन्द्रिका कुमारतुंगा ने भारत की यात्रा की तथा दोनों देशों के सम्बन्धों, विशेषकर आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों के विकास, सार्क तथा साफ्टा को शक्तिशाली बनाने तथा सम्बन्धों के अवरोधकों के समाधान के लिए आवश्यक प्रयत्नों का समर्थन किया।

दिसम्बर, 1996 में श्रीलंका की राष्ट्रपति चन्द्रिका कुमारतुंगा ने भारत की सात दिवसीय निजी यात्रा की इस दौरान भारतीय नेताओं से उनकी मुलाकात हुई। दोनों राष्ट्रों ने आपसी सहयोग तथा क्षेत्रीय सहयोग को विकसित करने की प्रक्रिया को दृढ़ बनाने की की सहमति दोहराई। भारत ने जनवरी 1996 में हुए करार के तहत श्रीलंका को 105 करोड़ रूपयों का ऋण दिया। सन् 1996 के बाद से भारत–श्रीलंका आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्धों में संतोषजनक प्रगति के आसार बने हुए हैं, क्योंकि दोनों देशों के नेताओं ने इस आवश्यकता को प्राथमिक मानते हए आवश्यक निर्णय की नीति अपनाई हुई है।[4]

1977 में श्रीलंका ने समाजवादी व्यवस्था को छोड़कर उदारीकरण की नीति को अपनाना प्रारम्भ किया तथा अपनी अर्थव्यवस्था को अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लिए खोलते हुए निजीकरण को अपनाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि 25 वर्षों के जातीय संघर्ष के कारण श्रीलंका के आर्थिक विकास की गति धीमी रही। 1980 के बाद जनता विमुक्ति पैरामुना ने परिवर्तन एवं निजीकरण को बढ़ावा दिया। परिणामतः निर्यात आधारित विकास ने 1993 में जी.डी.पी. दर को 7 प्रतिशत करने में सहायता प्रदान की। वैश्विक और घरेलू आर्थिक तथा राजनीतिक चुनौतियों के कारण विकास की दर घटती–बढ़ती

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रही। 1991–2000 में वार्षिक सकल घरेलू उत्पादन विकास दर 5.2 प्रतिशत के लगभग रही। आजादी के बाद 2001 में जी.डी. पी. वृद्धि दर 1.4 प्रतिशत नकारात्मक रही। वैश्विक आर्थिक समस्याओं तथा आतंकवादी हमलों ने श्रीलंका की अथव्यवस्था को नुकसान पहुँचाया, संघर्ष से अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक असंतुलन को उभारा।

यूनाईटेड नेशनल पार्टी के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में सुधारों, नियमों में ढील देने तथा निजी क्षेत्र के विकास के सम्बन्ध में विचार प्रकट किये। 2002 में श्रीलंका ने औसत से अधिक संवृद्धि प्राप्त की तथा इस वर्ष लिट्टे एवं श्रीलंका सरकार के मध्य सम्पन्न हुये शांति समझौते से सरकार के रक्षा खर्चे में कमी हुयी, निम्न ब्याज दर, घरेलू माँग में वृद्धि, पर्यटकों के आगमन में वृद्धि, शेयर बाजार में संवृद्धि तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि से श्रीलंका की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुयी तथा 2002 में आर्थिक विकास दर में सेवा क्षेत्र में वृद्धि के कारण 4 प्रतिशत का उछाल आया। कृषि क्षेत्र में भी वृद्धि हुई लेकिन कृषि आधारित होते हुए भी श्रीलंका में कृषि की दशा बहुत अच्छी नहीं है अतः इस ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।[5]

32 बिलियन डॉलर के सकल घरेलू उत्पादन सहित श्रीलंका एक निम्न मध्यम आय वाला विकासशील राष्ट्र है। यहाँ की प्रति व्यक्ति आय 1600 डॉलर है। स्थानीय भाषा में श्रीलंका में 91 प्रतिशत साक्षरता दर एवं जीवन प्रत्याशा 72 वर्ष है। इन दोनों में श्रीलंका, भारत, बांग्लादेश तथा पाकिस्तान से आगे है।

श्रीलंका में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में आय की असमानता है। 20 प्रतिशत मिलियन जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिशत अभी भी निर्धन है। जातीय संघर्ष से कृषि श्रम उत्पादकता के गिरने, ग्रामीण जनसंख्या के लिए आय सृजन के अवसरों की कमी उच्च मुद्रास्फीति तथा निम्न आधारभूत संरचना आदि गरीबी को कम करने में रूकावटें हैं।

1978 में समाजवादी व्यवस्था से परिवर्तित होकर श्रीलंका ने अपनी अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोल दिया। परन्तु सुधारों का गतिक्रम असमान था। प्रगतिशील आर्थिक सुधारों का एक काल 2002 से 2004 में यू.एन.पी. सरकार के नेतृत्व में रहा था जिसमें पूर्व राष्ट्रपति चन्द्रिका कुमारतुंगा तथा वर्तमान राष्ट्रपति महिन्द्रा राजपक्षे ने सामान्य दृ ष्टिकोण का पालन किया।

व्यापार और वाणिज्य में एक प्रमुख बाधा व्यापारिक असंतुलन की थी। सन् 1971 में श्रीलंका ने भारत से 20 करोड़ रुपये का आयात किया जबकि भारत को उसका निर्यात एक करोड़ रूपये था। सन् 1974 में दोनों देशों में सहमति हुई कि श्रीलंका में अनेक छोटे ग्रामीण औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना की जाए। दोनों देशों के बीच माइक्रोवेव व्यवस्था स्थापित किए जाने का भी निर्णय किया गया। सन् 1975 में दोनों देशों ने विज्ञान और तकनीकी सहयोग के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।[6]

भारत श्रीलंका संयुक्त आयोग अनेक क्षेत्रों में द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग को सुदृढ़ करने और उसमें विविधता प्रदान करने के लिए विभिन्न उपाय करता रहता है। भारत–श्रीलंका संयुक्त आयोग द्वारा सन् 1994 में जो निर्णय लिए गए उनमें से प्रमुख निर्णय निम्न थे –:

1 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में श्रीलंका को लाभ प्राप्त हो इसके लिए अधिकाधिक उपाय करना।
2. कुछ वस्तुओं जैसे ग्लिसरीन, रबर, सेरेमिक की टाइलों आदि के भारत को निर्यात किए जाने पर सीमा शुल्क में कमी करना।
3. डॉलर पर आधारित ऋणों में वृद्धि करना।
4. चेन्नई में बैंक ऑफ सिलोन' की एक शाखा खोलने की अनुमति प्रदान की गई।
5. नागरिक विमान की उड़ानों की सीटों की क्षमता में वृद्धि करने की बात कही गई।

सन् 1993 में भारत श्रीलंका व्यापार का कुल मूल्य 1131 करोड़ रूपये था, जिसमें भारत द्वारा श्रीलंका को 1069 करोड़ रूपये का निर्यात किया गया, श्रीलंका से केवल 62 करोड़ रूपये का आयात हुआ। इस प्रकार सन् 1994 के आस–पास द्विपक्षीय व्यापार में काफी वृद्धि हुई, यद्यपि संतुलन फिर भी श्रीलंका के विरुद्ध ही बना रहा। व्यापार असंतुलन होने के पीछे मुख्य कारण दोनों राष्ट्रों में जनसंख्या और संसाधनों में भारी अन्तर का होना है। भारत–श्रीलंका का बढ़ता हुआ व्यापार सन् 1995–96 में 1262 करोड़ रूपये तक पहुंच गया। व्यापार असंतुलन कम करने के उद्देश्य से श्रीलंका की सरकार ने सीमा शुल्क में और रियायत तथा अधिक पूँजी निवेश का आग्रह किया। भारत ने सन् 1995–96 में 18 वस्तुओं पर, जो कि श्रीलंका के लिए निर्यात योग्य होने के कारण महत्त्वपूर्ण थी, सीमा शुल्क में कमी करने की घोषणा की।[7]

जनवरी 1997 में दोनों देशों के मध्य व्यापार संतुलन के अन्तर को कम करने के लिए भारत ने श्रीलंका द्वारा निर्यात की जाने वाली 70 से 80 वस्तुओं पर शुल्क तथा अन्य रूकावटों को समाप्त करने की एकपक्षीय घोषणा की। भारत तथा श्रीलंका विदेश मंत्रियों ने दोनों देशों के मध्य नागरिक विमान की सुविधाओं के विस्तार को महत्त्वपूर्ण माना।

जुलाई, 1998 में दसवें 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन' का आयोजन श्रीलंका में सम्पन्न हुआ तथा भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सम्मेलन में भाग लेने कोलम्बो गये। 25 पृष्ठीय घोषणा पत्र में प्रधानमंत्री वाजपेयी के कई प्रस्तावों को सहज रूप से स्वीकार किया गया। आपसी सद्भाव, प्रेम एवं सहयोगपूर्ण वातावरण विकसित हुआ। भारत–श्रीलंका के बीच आर्थिक व राजनीतिक सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के लिए 28 दिसम्बर, 1998 को श्रीलंका की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

राष्ट्रपति चन्द्रिका कुमारतुंगा तीन दिवसीय भारत यात्रा पर आई। दोनों देशों भारत–श्रीलंका ने मुक्त व्यापार ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किये, जिससे सीमा शुल्क में चरणबद्ध कमी तथा आर्थिक सहयोग बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त हुआ, इसके साथ ही विविध क्षेत्रों संस्कृति, व्यापार, वाणिज्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में द्विपक्षीय आदान–प्रदान बढ़ावे लिए भारत–श्रीलंका फाउण्डेशन की स्थापना के करार पर भी हस्ताक्षर किये, जिससे दोनों देशों में परस्पर मैत्री व सहयोग का विकसित हुआ। मार्च, 1999 से यह प्रभावी हो गया।[8] इस समझौते के अन्तर्गत भारत श्रीलंका से आयात होने वाली 1000 वस्तुओं तथा श्रीलंका भारत से आयात होने वाली 900 वस्तुओं को कर मुक्त कर देगी। इसके अतिरिक 10 अन्य वस्तुओं पर 50 प्रतिशत कर रियायत होगा तथा अगले तीन वर्षों में पूर्णतया समाप्त कर दिया जायेगा। इसी प्रकार श्रीलंका अन्य 600 वस्तुओं पर 50 प्रतिशत कर रियायत अगले 3 वर्षों में करेगा। बाकी सभी वस्तुओं पर श्रीलंका पहले 3 वर्षों में 35 प्रतिशत अगले 3 वर्षों बाद 70 प्रतिशत तथा अन्ततः कुल 8 वर्षों बाद कर मुक्त कर देगा। इस प्रकार समझौते द्वारा

1. दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार बढ़ेगा।
2. श्रीलंका का भारत के विरूद्ध व्यापार घाटा कम होगा।
3. दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र के विकास में सहायक होगा।

भारत–श्रीलंका के आर्थिक सम्बन्धों में 'साफ्टा' समझौता का प्रभाव

भारत श्रीलंका के बीच हुआ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता दक्षेस के मध्य ''दक्षिण एशियाई प्राथमिकता व्यापार समझौते'' (साफ्टा) के लिए आशा की एक नवीन किरण है। सन् 1991 में आयोजित दक्षेस के छठे शिखर सम्मेलन में श्रीलंका द्वारा 'साफ्टा' के निर्माण का प्रस्ताव रखा था जिसे दक्षेस के सदस्य देशों द्वारा दक्षेस के सातवें शिखर सम्मेलन में स्वीकृत कर लिया गया। पारस्परिक आर्थिक लाभ एवम् सहयोग बढ़ाने की दिशा में श्रीलंका द्वारा साफ्टा के लिए किया गया यह प्रयास दक्षेस के कुछ सदस्य देशों के मतभेदों तथा आशंकाओं के कारण क्रियान्वित नहीं हो सका और अन्ततः 2001 में सर्वसम्मति से बनाकर इसे लागू करने का निर्णय दक्षेस को लेना पड़ा।[9]

भारत–श्रीलंका ने द्विपक्षीय मुक्त व्यापार की स्थापना का ऐतिहासिक समझौता कर नवीन मार्ग प्रशस्त किया है। सन् 1997 में श्रीलंका ने भारत को मात्र 4 करोड़ डॉलर मूल्य के उत्पादों का निर्यात किया था। भारत ने श्रीलंका को करीब 60 करोड़ डॉलर मूल्य के उत्पादों का निर्यात किया। भारत और श्रीलंका के मध्य द्विपक्षीय समझौते से श्रीलंका को भारत से विशेष रियायतें मिलने से दक्षेस के सदस्य देशों का विश्वास "साफ्टा" की घोषणा के प्रति सुदृढ़ हुआ है।

दोनों राष्ट्रों ने इस प्रकार की आशंका को खत्म करने के लिए अपने बाजारों में तीसरे देश के उत्पादों की निषेधात्मक सूची बनाने के साथ–साथ ऐसे उपाय किए कि इनका न्यूनतम 35 प्रतिशत मूल्य संवर्द्धन निश्चित हो सके। इसके लिए पहले से ही कर मुक्त निर्यात किए जाने वाले उत्पादों की सूची बना ली गई। इस प्रकार के उपायों से दक्षेस देशों की 'साफ्टा' के दुरूपयोग सम्बन्धी कई शंकाओं का समाधान हुआ है। भारत और श्रीलंका ने 'साफ्टा' का लघु मॉडल दक्षेस देशों के सम्मुख प्रस्तुत किया। इस मॉडल से दोनों देशों के लाभ और विदेशी व्यापार में वृद्धि होगी।[10]

भारत और श्रीलंका ने 4 करोड़ रूपये की संयुक्त पूँजी से ''भारत–श्रीलंका फाउण्डेशन'' की स्थापना के लिए सहमति दी। इसके अनुसार व्यापार, वाणिज्य, विज्ञान, उद्यौगिकी, कला और संस्कृति के क्षेत्र में द्विपक्षीय आदान–प्रदान और सहयोग को बढ़ावा देने का कार्य होगा। इस प्रकार द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते के द्वारा दोनों देशों में व्यापारिक क्षेत्र के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

दक्षिण एशियाई सहयोग और भारत–श्रीलंका आर्थिक सहयोग

दक्षेस के अन्तर्गत सदस्य देशों को व्यापार वरीयता देने के साथ अनेक कार्यक्रम एवं परियोजनाएँ तय की गई हैं। अब आवश्यकता क्षेत्रीय सहयोग को निरन्तर बढ़ाने की, नये क्षेत्र खोलने की तथा आपसी विश्वास को प्रगाढ़ करने की है।[11] दक्षेस के 10वें शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने अपने भाषण में कहा कि– "हमारे संगठन का प्रमुख उद्देश्य यही है कि हम सभी एक साथ आर्थिक क्षेत्र में धनवान देश कहलाएँ"। वाजपेयी की इस भावना को पूरा करने के लिए प्रबल इच्छा शक्ति का होना जरूरी है। मुक्त व्यापार क्षेत्र की स्थापना से दोनों देशों के अर्थतंत्रों के विकास में मदद मिली है। आपसी व्यापार बढ़ा है, निवेश तथा विभिन्न क्षेत्रों में आदान–प्रदान की गति में भी इजाफा हुआ है। चन्द्रिका कुमारतुंगा ने भारत को दक्षिण एशिया में सर्वप्रमुख बताया। इस वक्तव्य से कुमारतुंगा की भारत के प्रति सकारात्मक सोच की प्रवृति की झलक प्रस्तुत होती है। चाय और रबर के निर्यात में श्रीलंका अधिकतम 15 मिलियन किलो चाय का निर्यात कर सकता है। रबर के सम्बन्ध में प्राकृतिक रबर को नकारात्मक सूची में रखा जबकि निर्मित उत्पादन को सूची में नहीं रखा। इस मुक्त व्यापार समझौते से आने वाले वर्षों में साफ्टा के विकास में पहला कदम साबित होगा।[12]

दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने के प्रयासों को अपेक्षित सफलता अभी तक नहीं मिली है। दक्षिण एशिया में जहाँ भारत पाकिस्तान का सहयोग इतना अच्छा नहीं है लेकिन भारत–श्रीलंका के आर्थिक सम्बन्ध सुदृढ़ हैं। भारत–श्रीलंका के प्रत्येक मसले में हर सम्भव सहायता देता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्कर्ष –

भारत–श्रीलंका में आर्थिक सम्बन्धों का सिलसिला प्रारम्भ से ही था लेकिन उत्तरोत्तर इसमें वृद्धि होती गई। इसमें सुदृढ़ता का कारण समय–समय पर राजनीतिक यात्रा तथा आपसी मसलों को शांतिपूर्ण तरीके से निपटाना आदि शामिल है। भारत तथा श्रीलंका का सदैव यह प्रयास रहता है कि संयुक्त उद्योग तथा व्यापार के स्वर्णिम अवसरों को न जाने दिया जाए। अब भी दोनों को अधिक लाभदायी आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्धों हेतु द्विपक्षीय शांतिपूर्ण वातावरण का माहौल निर्माण करना चाहिए। निश्चय ही भारत तथा श्रीलंका के व्यापारिक सम्बन्धों की वजह से दक्षिण एशिया में आर्थिक सम्बन्ध मजबूती के रहे हैं तथा इन दोनों देशों के आपसी सम्बन्ध (आर्थिक तथा व्यापारिक) एक प्रकार से दक्षिण एशिया के अन्य राष्ट्रों के लिए उदाहरण साबित हो रहे हैं। इस प्रकार दक्षिण एशिया के अन्य राष्ट्र भी भारत–श्रीलंका की तर्ज पर समस्याओं का सामना करते हुए क्षेत्र में व्यापार तथा आर्थिक सम्बन्ध अवश्य ही कायम करेंगे, ऐसी आशा है यद्यपि दोनों देशों के मध्य कुछ आर्थिक समस्याएँ हैं जो अग्रलिखित हैं।

सन्दर्भ सूची

1. टाईम्स ऑफ इण्डिया, 16 दिसम्बर 2001
2. भारत सरकार विदेश मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट, 1994–95, नई दिल्ली, पृ.सं. 7
3. एशियन डवलपमेन्ट आउटलुक, 2007, पृ.सं. 73
4. द हिन्दु, नई दिल्ली, 5 मई 2000
5. हरीशरण : हिन्द महासागर, चन्द्र प्रकाश एण्ड कम्पनी, हापुड़, 2004, पृ.सं. 13
6. एशियन सर्वे, 1996, पृ.सं. 35–38
7. आई.वी.सिंह, : चाईनीज स्त्रोतेजिक डिप्लामैसी इन आशियान, ज्ञानदा पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005, पृ.सं. 66
8. एच.के. पाण्डे : स्ट्रिग ऑफ पर्ल्स एण्ड चाईना, सुमीत इन्टरप्राईजेज, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं. 133–136
9. महाराज.के. चोपड़ा : इण्डिया दी सर्च फॉर पॉवर, लालवानी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 71
10. सतीश कुमार एवं बजरंग कुमार : 21वीं सदी में भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ, आंतरिक एवं बाह्य, मोहित पब्लिकेशन, दिल्ली, 2016, पृ.सं. 36
11. के.आर.सिंह : मैरीटाईम सिक्योरिटी फॉर इण्डिया, न्यू चैलेन्ज एण्ड रिस्पोंस, न्यू सेन्चुरी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृ.सं. 171
12. के.एस. परिथरन : फॉरेन पॉलिसी एण्ड मैरीटाईम सिक्योरिटी ऑफ इण्डिया, न्यू सेन्चुरी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2013, पृ.सं. 116–123

RRIJM 2015, All Rights Reserved